5

यीशु का अग्रदूत

(3:1-12)

मत्ती ने यहूदिया के जंगल में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रचार का हवाला देते हुए मसीह के आगमन की तैयारी के विषय को आरम्भ किया। यूहन्ना की सेवकाई मलाकी के बाद से भविष्यवाणी की खामोशी के लगभग चार सौ वर्षों की चुप्पी को तोड़ती है।[1] मत्ती ने यह माना कि उसके यहूदी पाठक यूहन्ना से पहले ही परिचित होंगे सो उसने उस भविष्यवक्ता की पृष्ठभूमि पर विवरण नहीं दिया। यह तथ्य कि यहूदी लोग यूहन्ना से अच्छी तरह परिचित थे सुसमाचार के विवरणों में साबित किया गया है और यहूदी इतिहासकार जोसेफस द्वारा इसकी पुष्टि हुई है।[2]

लूका सुसमाचार के अन्य किसी भी विवरण से यूहन्ना के आरम्भिक जीवन पर अधिक जानकारी देता है। यूहन्ना का पिता जकर्याह नामक याजक था जो अबिय्याह के आठवें भाग में से था (लूका 1:5)। राजा दाऊद ने याजकाई को चौबीस भागों में संगठित किया (1 इतिहास 24)। इनमें से प्रत्येक साल के दो सप्ताह मन्दिर में सेवा करता था। अन्य चार सप्ताह यहूदियों के प्रमुख पर्व के दिन थे जिनमें अधिकतर (यदि सारे नहीं) याजक भाग लेते थे।

जकर्याह की पत्नी इलीशिबा बच्चे जनने की उम्र तक बांझ रही थी (लूका 1:7, 18)। वह यीशु की माता मरियम की कुटुम्बिनी, शायद रिश्ते की बहन थी (KJV) (लूका 1:36)। जकर्याह के मन्दिर में सेवा देते हुए, स्वर्गदूत ज़िब्राइल ने उसे दर्शन देकर बताया कि इलीशिबा एक पुत्र जनेगी, जिसका नाम ''यूहन्ना'' होगा। स्वर्गदूत की बात पर विश्वास न जताने पर जकर्याह को गूंगा कर दिया गया और वह अपने बेटे के जन्म तक एक शब्द भी नहीं बोल पाया (लूका 1:11-22, 59-64)।

जकर्याह को स्वर्गदूत के द्वारा बताया गया था कि यूहन्ना परमेश्वर का एक विशेष सेवक होगा और वह अपनी माता की कोख में ही पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा। उसने इस्राएल के पुत्रों में से बहुतेरों को उनके परमेश्वर की ओर मोड़ना था (लूका 1:15, 16)। बहुत से लोग यह मानते हैं कि यूहन्ना नाज़ीर था क्योंकि वह दाखरस से और मय से दूर रहता था, चाहे अन्य शर्तों का उल्लेख नहीं है (लूका 1:15; देखें गिनती 6)। स्वर्गदूत ने यह भी कहा कि यूहन्ना ने ''एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में हो कर'' आना था (लूका 1:17)। मलाकी ने भविष्यवाणी की कि ''यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले एलिय्याह नबी'' ने आना था (मलाकी 4:5)। यूहन्ना के जन्म के बाद जकर्याह ने भविष्यवाणी की कि वह ''प्रभु के मार्ग तैयार करने के लिए उसके आगे चलेगा'' (लूका 1:76)। उसकी बात मलाकी 3:1 से बहुत मिलती है। स्वर्गदूत ने कहा कि वह ''प्रभु के लिए एक योग्य प्रजा तैयार'' करने के लिए आगे जाएगा (लूका 1:17)। बाद में यीशु ने कहा कि यूहन्ना ही वह आने वाला एलिय्याह था (11:10, 14; 17:11-13)।

तैयारी का संदेश (3:1-4)

[1]उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार-करने लगा, [2]''मन फिराओ'' क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। [3]यह वही है जिसकी चर्चा यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा की गई,

''कि जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द हो रहा है,
'प्रभु का मार्ग तैयार करो,
उसकी सड़कें सीधी करो।' ''

[4]यह यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहिने था, और अपनी कमर में चमड़े का कटिबन्ध बान्धे हुए था। उसका भोजन टिड्डियां और वनमधु था।

आयत 1. उन दिनों में वाक्यांश जन्म के विवरण (अध्याय 1; 2) को यीशु की सेवकाई के लिए तैयारी के साथ जोड़ता है (अध्याय 3)। सम्भवतया यह उस समय की बात है जब यीशु नासरत में रह रहा था (2:23), चाहे कुछ लोगों ने इसकी व्याख्या मसीही लहर के आरम्भ के साथ जोड़ी थी। हेरोदेस की मृत्यु (4 ई.पू.) के बाद से लगभग 30 वर्ष बीत गए थे और यीशु का परिवार इस्राएल में लौटकर नासरत में बस चुका था (2:23)। लूका 3:1 विशेषकर **यूहन्ना** [की] सेवकाई के आरम्भ को ''तिबिरियुस कैसर के राज्य के पन्द्रहवें वर्ष'' में बताता है (28 ईस्वी)। यीशु ने अपनी सेवकाई का आरम्भ तब किया जब वह ''लगभग तीस वर्ष'' का था (लूका 3:23) और यूहन्ना यीशु से छह महीने बड़ा था (लूका 1:36, 56, 57)। इसलिए यूहन्ना भी उसकी सेवकाई के आरम्भ के समय लगभग तीस वर्ष का था।

सुसमाचार के लेखकों ने यूहन्ना या यीशु के जवान होने के सालों के बारे में बहुत नहीं बताया (देखें लूका 1:80; 2:40-52)। कारण यह है कि सुसमाचार के विवरणों का ज़ोर यीशु की सेवकाई पर है जिसमें उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने को चरम बनाया गया है। पहली सदी के बाद, यीशु के बचपन के आस पास की कई सजावटी दन्तकथाएं बन गईं। रॉबर्ट एच. माउंस ने लिखा, ''सौभाग्य से कैनन वाले सुसमाचार की पुस्तकों में कोई ऐसी भावनात्मक शब्द चित्र नहीं है। बेशक यीशु वैसे ही पला बड़ा जैसे कोई अन्य यहूदी लड़का बढ़ता है।''[3]

आज कुछ लोग अनुमान लगाते हैं कि यूहन्ना कुमरान के सम्प्रदाय में रहता था जहां मृत-सागर की पत्रियां मिली थीं। उनका सुझाव है कि या तो उसके बूढ़े माता-पिता (लूका 1:7) मर गए और सम्प्रदाय के लोगों ने उसकी देखभाल की या वह एक युवक के रूप में सम्प्रदायक के साथ मिल गया। उनका कहना है कि इस कारण उसका दृष्टिकोण एसेनियों की शिक्षाओं से बना। उनका अनुमान युक्तिसंगत हो सकता है पर इसे साबित नहीं किया जा सकता। पवित्र शास्त्र केवल इतना कहता है कि यूहन्ना ''बढ़ता और आत्मा में बलवन्त होता गया, और इस्राएल पर प्रगट होने के दिन तक जंगलों में रहा'' (लूका 1:80)। इसके अलावा, वह एक नबी था जिसका संदेश उसे स्वर्ग से मिला था: ''... परमेश्वर का वचन जंगल में जकर्याह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुंचा'' (लूका 3:2)।

यूहन्ना को **बपतिस्मा देने वाला,** या ''बपतिस्मा दाता'' (*baptistēs*) केवल इसलिए

कहा जाता था क्योंकि वह लोगों को बपतिस्मा देता था (3:6 पर टिप्पणियां देखें)। मत्ती के अनुसार वह **यहूदिया के जंगल में प्रचार** कर रहा था; ''प्रचार'' शब्द उस शब्द (*kērussō*) से लिया गया है जिसका अर्थ है (संदेश की तरह) ''मुनादी करना।'' ''मुनादी करने वाला'' उसे कहा जाता था जो सार्वजनिक घोषणाएं करता था। ''जंगल'' (*erēmos*) शब्द आम तौर पर उस स्थान के लिए इस्तेमाल होता है जिसमें कोई आबादी न हो और जिस पर खेती न होती हो। मत्ती ने इसका इस्तेमाल यरूशलेम और मृत सागर के बीच के कम जनसंख्या वाले क्षेत्र के लिए किया, जिसमें से आज भी कुछ पथरीला और सुनसान इलाका है। जैक पी. लुइस ने इस क्षेत्र का विवरण इस प्रकार किया है:

> केन्द्रिय पहाड़ियों से मृत सागर की ओर ढलान में नीचे की ओर यहूदिया का जंगल पानी में एक बिखरा सा इलाका है क्योंकि भूमध्य से बादल पहाड़ी ढलान के पश्चिम में अपनी नमी गिरा देते हैं। तीखे दर्रों से कटा, गुफ़ाओं और चट्टानों से भरा यह पहाड़ी इलाका एक उजाड़ जंगल है जो आरम्भिक सदियों में कुमरान के वैरागियों जैसे लोगों को आकर्षित करता था।[4]

यह तथ्य कि यूहन्ना ने अपनी सेवकाई का आरम्भ जंगल में किया महत्वपूर्ण है। आम लोगों की अपेक्षा यह थी कि मसीहा का अपने लोगों को छुड़ाने का काम वहां से आरम्भ होगा (देखें 24:23-26; प्रेरितों 21:38)।[5] बाद में यूहन्ना ने ''यरदन के पार बैतनिय्याह'' (यूहन्ना 1:28) और ''शालेम् के निकट ऐनोन'' (यूहन्ना 3:23) के नगरों के निकट यरदन नदी में लोगों को बपतिस्मा देते हुए और आगे उत्तर और पूर्व में प्रचार किया।

आयत 2. यूहन्ना द्वारा दिया गया संदेश स्पष्ट, सरल और आसानी से समझा जाने वाला था। उसने यहूदियों को **मन फिराने** और परमेश्वर की ओर लौटने को कहा। उसने यह कहकर कि उन्हें अन्यजातियों की तरह ही मन फिराने की आवश्यकता है अपने यहूदी सुनने वालों को चौंका दिया। ''मन फिराव'' के लिए यहां वचन में इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द (*metanoeō*) वह है जो मन के बदलने का संकेत देता है जिससे जीवन में नयापन आता है। जॉन ए. ब्रोडस ने कहा है कि नये नियम में इस विशेष यूनानी शब्द का इस्तेमाल जहां भी हो वह ''पाप से पवित्रता की ओर मन, उद्देश्य को बदलने के सम्बन्ध में है।''[6] यहूदियों को मन फिराने के लिए कहकर यूहन्ना ने पुराने नियम के नबियों के आग्रह को जीवित कर दिया (यशायाह 55:7; यिर्मयाह 15:19; यहेजकेल 33:11; होशे 14:1, 2; योएल 2:12, 13; जकर्याह 1:3, 4; मलाकी 3:7)।

यूहन्ना ने आवश्यकता के बोध के साथ मन फिराव की अपनी बात का संकेत दिया: ''**क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।**'' राज्य जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर द्वारा सदियों पहले की गई थी (दानिय्येल 2:44; 7:13, 14) आया नहीं था, पर इसके आने का समय निकट आ गया था। यूहन्ना ने लोगों को बताया कि वे यदि इसके नागरिक बनना चाहते हैं तो उन्हें अपने मनों, व्यवहारों और आचरण को बदलना होगा। मन फिराव और राज्य के निकट होने का संदेश यीशु (4:17) और उसके प्रेरितों द्वारा (10:7) आगे बढ़ाया गया। रॉबर्ट एच. गुंड्री ने लिखा है, ''आदि रूप यूहन्ना, गुरु यीशु, बारह चेले, सब एक ही संदेश का प्रचार करते हैं।''[7]

मत्ती 3:2 को पहली बार पवित्र शास्त्र में ''स्वर्ग के राज्य'' का नाम देते हुए दिखाया गया

है। यह वाक्यांश मत्ती के लिए विशेष है जिसमें इस वाक्यांश का इस्तेमाल इक्कतीस बार हुआ है। सुसमाचार के अन्य विवरणों में इसके विपरीत ''परमेश्वर का राज्य'' है।[8] पक्के यहूदी ढंग में पुस्तक को कई बार ईश्वरीयता के प्रत्यक्ष हवाले से बचने के लिए ''परमेश्वर'' के लिए ''स्वर्ग'' के विकल्प के साथ इस्तेमाल किया गया है। राज्य का आरम्भ स्वर्ग में हुआ और यह स्वर्ग से ही शासित होना था। यीशु ने पिलातुस से कहा, ''मेरा राज्य इस संसार का नहीं'' (यूहन्ना 18:36)। प्रभु स्वर्ग में अपने सिंहासन से आज परमेश्वर के राज्य पर सिंहासन करता है (प्रेरितों 2:32-36; 1 कुरिन्थियों 15:24)।

यह राज्य पृथ्वी पर उस कलीसिया के रूप में प्रगट हुआ, जिसकी यीशु ने मत्ती 16:18, 19 में भविष्यवाणी की थी। पिन्तेकुस्त के दिन परमेश्वर के राज्य पर मसीह के शासन और हुकूमत के संदेश को मान लेने वालों को बपतिस्मा दिया गया और उन्हें राज्य में मिला लिया गया था (प्रेरितों 2:38, 47)। पौलुस ने कहा कि ऐसे लोगों को ''... अन्धकार के वश से छुड़ाकर [उसके] प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया'' (कुलुस्सियों 1:13)। इब्रानियों के लेखक ने अपने मसीही पाठकों को बताया कि उन्हें ''एक राज्य'' मिला था ''जिसे हिलाया नहीं जा सकता'' (इब्रानियों 12:28)। प्रेरित यूहन्ना ने अपने साथी मसीहियों को बताया कि वह ''... (उनका) भाई ... राज्य में (उनका) सहभागी'' था (प्रकाशितवाक्य 1:9)।

आयत 3. मत्ती दिखाता है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने मसीह के आगमन के सम्बन्ध में की गई **यशायाह** की भविष्यवाणी को पूरा किया।

''जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द हो रहा है
प्रभु का मार्ग तैयार करो
उसकी सड़कें सीधी करो।''

अन्तिम पंक्ति को छोड़ जिसमें ''परमेश्वर के लिए एक राजमार्ग चौरस करो'' को ''उसकी सड़कें सीधी करो'' किया गया है मत्ती का यशायाह 40:3 का उद्धरण सप्तत्ति अनुवाद पर आधारित है। इस कारण नाम ''प्रभु'' अधिक आसानी से यीशु पर लागू होता है।

मूल संदर्भ में यशायाह 40:3 परमेश्वर के लिए मार्ग तैयार करने के लिए है, जिसने बाबुल के निर्वासन से यरूशलेम में लौटने मे,[9] यानी एक राष्ट्रीय छुटकारे और बहाली के काम में अगुआई करनी थी, परन्तु मसीह के लिए यूहन्ना के मार्ग तैयार करने में उनका पूरा होना अधिक है, जिसने परमेश्वर के लोगों के लिए आत्मिक छुटकारा और बहाली लानी थी।

''सीधा'' करने का रूपक और मार्ग चौड़ा करने की बात इस तथ्य पर आधारित है कि प्राचीन जंगली मार्ग आम तौर पर खराब ही होते थे। पॉल टी. बटलर ने इसकी व्याख्या की है:

> प्राचीन समयों में यात्रा करने के लिए झाड़ियों, पहाड़ों, तराइयों, चट्टानों और जंगली जानवरों वाले इन जंगलों में रुकावटें आती थीं। जब राजा और शासक कहीं जाने की इच्छा करते और उसमें नापसन्द इलाके जैसे कोई टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता होता तो वे अपने आगे तराइयों और निचली पहाड़ियों को भरने के लिए गुलामों और कर्मचारियों के बड़े-बड़े दल भेज देते जिससे उनके लिए सफ़र सुरक्षित और रास्ता आसान हो जाता।[10]

मन फिराव और राज्य के निकट आने का प्रचार करते हुए यूहन्ना लोगों के मनों को आने वाले राजा के लिए तैयार कर रहा था (देखें मरकुस 1:2, 3; लूका 3:4-6; यूहन्ना 1:23)। लुइस ने लिखा है, ''इस समय जंगल में कुमरान के समुदाय के दूसरे लोग अपने आपको 'मार्ग' कहते थे और यशायाह से बिल्कुल थोड़ा अलग ढंग से विनती करते थे'' [40:3]।[11] उनकी लहर खत्म हो गई थी, जबकि यूहन्ना ने मसीह के राज्य के लिए मार्ग तैयार किया जो सदा तक रहता है।

आयत 4. यूहन्ना को ऊंट के रोम का वस्त्र पहने **अपनी कमर में चमड़े का कटिबन्ध** बान्धे हुए देखना कितना अनोखा होगा! यह विवरण उस जंगल के साथ जहां वह रहता था और उस सीधे साधे संदेश के साथ मेल खाता है जिसका वह प्रचार करता था। यूहन्ना का जीवन आत्म इनकार और बलिदान वाला जीवन है। यीशु ने उसे उन धनवानों से अलग बताया जो ''कोमल वस्त्र'' पहनते और ''राजभवनों में'' रहते थे (11:8)।[12] उसके फटे पुराने वस्त्र और उसके पहरावे से बेशक लोगों को प्राचीन समय के लोग याद आ गए होंगे (जकर्याह 13:4), विशेषकर एलिय्याह (2 राजाओं 1:8; देखें मलाकी 3:1; 4:5; मत्ती 11:14; 17:10-13)। यहूदियों को बिल्कुल पता नहीं था कि वे उसे क्या मानें, परन्तु उन्हें यह पता था कि वह एक नबी था (11:9; 21:26)।

यूहन्ना का भोजन **टिड्डियां** और **वनमधु** भी उसके आस पास के जंगल के साथ मेल खाता था, परन्तु अधिक आबादी वाले इलाकों में रहने वालों में यह खाना आम नहीं था। यह मानते हुए हुए कि यूहन्ना वास्तव में एक नाज़ीर था गुंड्री ने टिप्पणी की है, ''टिड्डियां और वनमधु न केवल जंगल की उपयुक्त खुराक का संकेत देती हैं बल्कि उस मांस से बचे रहने के लिए पवित्र जन के जिस्म से लहू निचोड़ा जाना था (इस कारण टिड्डियां) और दाखरस से वंचित होना (इस कारण मधु) उपयुक्त खुराक था।''[13] खाने पीने की यूहन्ना की आदतों के कारण उस पर यह गलत आरोप लगा कि वह दुष्टात्मा से ग्रस्त है (11:18)।

''वन मधु'' ''मधुमक्खियां पालने वालों के द्वारा बेचे जाने वाले मधु के विपरीत, जंगल में मधुमक्खियों द्वारा बनाया गया शहद था।''[14] ऐसा शहद आम तौर पर बाइबल के समयों में पाया जाता था (व्यवस्थाविवरण 32:13; न्यायियों 14:8, 9, 18; 1 शमूएल 14:25, 26, 29; भजन संहिता 81:16)। हमारे पेट में टिड्डियां खाने की बात से कुछ होने लग सकता है, पर परमेश्वर ने स्पष्टतया इस्राएलियों को उन्हें खाने की अनुमति दी और उन्हें प्रोत्साहित किया होगा (लैव्यव्यवस्था 11:22)। उनकी तैयारी के सम्बन्ध में एच. लियो बोल्स ने लिखा है:

> कई बार उन्हें भूना जाता था और कई बार उबाला जाता था या नमक लगाकर रख लिया जाता था और खाया जाता था, क्योंकि उन्हें सभी पूर्वी देशों में जहां वे पाई जाती थीं निर्धन वर्ग के लोगों द्वारा खाया जाता था। कई बार उन्हें धूप में सुखाकर टिड्डियों का मौसम खत्म होने के बाद में इस्तेमाल के लिए सम्भाल लिया जाता था। खाने के लिए तैयार करने से पहले उनके सिर, टांगें और पंख उतार दिए जाते थे। उन्हें ताजा और सुखाकर दोनों तरह से खाया जाता था।[15]

कुछ पूर्वी संस्कृतियों में स्वादिष्ट माना जाने के कारण आज भी टिड्डियों का इस्तेमाल भोजन के रूप में किया जाता है।

तैयारी का बपतिस्मा (3:5, 6)

[5]तब यरूशलेम के और सारे यहूदिया के और यरदन के आस पास के सारे देश के लोग उसके पास निकल आए। [6]और अपने-अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया।

आयत 5. अधिकतर नबी नगरों, कस्बों और गांवों में जाते थे जहां लोग होते थे, जब लोग जंगल में यूहन्ना के पास आते थे। यूहन्ना यरदन नदी में बपतिस्मा देता था और साधारण लोग बपतिस्मा लेने के लिए उसके पास आते थे। मत्ती ने लिखा कि **यरूशलेम के और सारे यहूदिया के और यरदन के सारे लोग निकलकर उसके पास आए**। ''सारे'' का इस्तेमाल यहां पर अतिश्योक्ति के रूप में हुआ। निश्चय ही उस स्थान के सभी **लोग** उसे सुनने के लिए नहीं जा रहे थे, बल्कि उन स्थानों के अधिकतर लोग जा रहे थे। जोसेफस ने कहा है कि वह इतना प्रसिद्ध था कि हेरोदेस अन्तिपास को लोगों में विद्रोह का भय हो गया था।[16]

आयत 6. यूहन्ना से सुनने के लिए आने वाले अधिकतर लोगों ने **उससे बपतिस्मा लिया**। यूनानी शब्द (*baptizō*) का अनुवाद ''बपतिस्मा'' का अर्थ है ''गोता, डुबकी, धोना।''[17] यूहन्ना लोगों को ''बपतिस्मा'' देने के समय उन्हें पानी में डुबकी देता था (देखें यूहन्ना 3:23)। मसीही बपतिस्मा भी पानी में डुबकी ही है, जिसमें पश्चात्तापी विश्वासी को मसीह के साथ ''दफनाया'' जाता है (रोमियों 6:4; कुलुस्सियों 2:12)। ''उण्डेलना'' और ''छिड़कना'' के भी यूनानी भाषा में शब्द हैं, लेकिन इनका इस्तेमाल नये नियम में बपतिस्मे के लिए लिए *कभी नहीं* हुआ।

धार्मिक संस्कार के रूप में पानी में डुबकी की प्रथा प्राचीन जगत में आम पाई जाती है, चाहे यह इससे जुड़े *अर्थों से भिन्न* थी। डेविड एस. डॉकरी ने लिखा है:

> उदाहरणों में गंगा नदी में हिन्दु संस्कार, एंकी के बाबुल के समुदाय में शुद्धिकरण का संस्कार, और नवजन्मे बच्चों के शुद्धिकरण की मिस्रियों की प्रथाएं और मृतकों पर किए जाने वाले सांकेतिक पुनर्जीवित करने के संस्कार। *बैपटिज़ो* और इससे जुड़े शब्दों का इस्तेमाल आरम्भिक क्रेते के धर्म, थरेसी धर्म, ऐलीसिनियन के रहस्य भरे धर्म और कई नॉस्टिक समूहों और सम्प्रदायों की प्रथाओं में इस्तेमाल किए जाते थे।[18]

परन्तु यहूदी मत की प्रथाओं (मरकुस 7:3, 4; इब्रानियों 6:2; 9:10) में यूहन्ना के बपतिस्मे से अधिक निकट सम्बन्ध पाया जाता है। औपचारिक रूप में शुद्ध होने के लिए व्यवस्था द्वारा रस्मी तौर पर धोना आवश्यक है (लैव्यव्यवस्था 15)। मिशनाह के बाद के लेखों का एक पूरा भाग इस विषय को समर्पित है।[19] इसके अलावा यहूदियों के रस्मी नहाने के कई पुरातत्वीय उदाहरण (*miqwa´oth*) जो पहली सदी के निकट के हैं, इस्राएल में आज भी पाए जाते हैं। रस्मी तौर पर धोने की बातें विशेषकर कुमरान में अर्थात उस समुदाय में जो मन फिराव और एक नये युग के आरम्भ पर ज़ोरदार ढंग से ज़ोर भी देता था, में प्रसिद्ध थीं।[20] इसके अलावा कालक्रम पर चाहे बहस हो पर बहुतों का मानना है कि पहली सदी के अन्यजातियों को यहूदी धर्म ग्रहण करने के लिए खतना करवाने और बलिदान भेंट करने के साथ साथ डुबकी भी लगानी

आवश्यक होती थी।[21]

व्यवस्था के अनुसार रस्मी तौर पर धोने और यहूदी मत धारण करने के लिए बपतिस्मे की परम्परा चाहे यूहन्ना के बपतिस्मे के लिए एक आधार बन गई पर इसमें कई अन्तर थे। (1) यूहन्ना का बपतिस्मा नबी द्वारा दिया जाता था जबकि रस्मी तौर पर धोना और यहूदी मत को ग्रहण करने के लिए बपतिस्मा अपने आप लिया जाता था। (2) व्यवस्था के अनुसार धोने का सम्बन्ध रस्मी तौर पर शुद्ध होने से अधिक था, यूहन्ना के बपतिस्मे में मन फिराव और पापों की क्षमा पर दिए जाने वाले अत्यधिक ज़ोर दिए जाने के विपरीत था। (3) व्यवस्था में रस्मी तौर पर धोना बार बार होता था, लेकिन यूहन्ना के बपतिस्मे में एक ही बार किया जाने वाला काम था। (4) अन्यजातियों के लिए यहूदी मत में प्रवेश करने के लिए बपतिस्मा था, जबकि यहूदियों के लिए यूहन्ना का बपतिस्मा परमेश्वर के राज्य के आने की तैयारी में था। यहूदी मत में जुड़े होने के बावजूद यूहन्ना का बपतिस्मा स्पष्टतया इसमें की जाने वाली बातों से अलग था। यूहन्ना ने स्वयं गवाही दी कि परमेश्वर ही था ''जिसने [उसे] जल से बपतिस्मा देने को भेजा'' (यूहन्ना 1:33)। यीशु ने स्पष्ट संकेत दिया कि यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग की ओर से अधिकृत था (देखें 21:23-27)।

यूहन्ना के पास आने वाले लोगों को अपने पापों का अंगीकार करने के बाद बपतिस्मा दिया जाता था, क्योंकि नबी ने क्षमा पाने की चाह करने वाले के लिए मन फिराव एक शर्त रखी थी (देखें एज्रा 9:6-15; भजन संहिता 51:1-4; दानिय्येल 9:4-11)। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने सुझाव दिया है, ''अंगीकार का स्वभाव बहुत ही सामान्य रहा होगा। क्योंकि यूहन्ना की सेवकाई का छोटा सा काल और इतनी बड़ी संख्या जिसे उसने बपतिस्मा दिया प्रत्येक व्यक्ति के सब पापों के विस्तृत अंगीकार की मान्यता को रोकता है।''[22]

यूहन्ना **यरदन नदी में** पश्चात्तापी यहूदियों को बपतिस्मा देता था। लुइस ने यरदन का वर्णन इन शब्दों में किया है:

> गलील की झील से मृत सागर तक नीचे की ओर ऊपर से चाहे यह दूरी पैंसठ मील की है पर यरदन की लम्बाई दो सौ मील से अधिक है। बपतिस्मे के उद्देश्यों के लिए पर्याप्त पानी के साथ, इसकी चौड़ाई यरीहो के पूर्व में लगभग नब्बे फुट है और गहराई तीन से बारह फुट है। घाटों को छोड़ इसे नाव से ही पार किया जाना आवश्यक है।[23]

तैयारी के लिए मन फिराव (3:7-12)

[7]जब उसने बहुतेरे फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मा के लिए अपने पास आते देखा, तो उनसे कहा हे सांप के बच्चो! तुम्हें किस ने जता दिया कि आने वाले क्रोध से भागो? [8]इसलिए मन फिराव के योग्य फल लाओ। [9]और अपने-अपने मन में यह न सोचो कि हमारा पिता अब्राहम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिए संतान उत्पन्न कर सकता है। [10]अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिए जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है।

[11]मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला

है, वह मुझ से शक्तिशाली है। मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। 12उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा और अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।

आयत 7. यहूदी अगुवे उत्सुकतावश यूहन्ना से सुनने के लिए जाते हैं। उनमें **फरीसियों** के प्रतिनिधि होते थे। आम तौर पर माना जाता है कि यह दल मक्काबी विद्रोह के हसीदियों से निकला था।[24] वे यूनानी संस्कृति को मानने से इनकार करते हैं जिसे उस काल के दौरान सिल्युसिडों द्वारा यहूदियों पर थोपा जाता था। समय के साथ फरीसियों ने व्यवस्था के गिर्द बाड़ के रूप में परम्पराओं का एक जटिल प्रबन्ध बना लिया था, जिसे तोड़ा न जा सके।[25] धर्मशास्त्रीय रूप में रूढ़िवादी होने के कारण वे स्वर्गदूतों, आत्माओं और मृतकों के पुनरुत्थान में विश्वास करते थे (प्रेरितों 23:8)। उन्हें वे अपने आप में यहूदियों का सबसे कठोर पंथ भी मानते थे (प्रेरितों 22:3; 26:5; फिलिप्पियों 3:5)। ''फरीसी'' नाम का अर्थ है ''अलग किया हुआ'' क्योंकि उन्होंने अपने आपको आम लोगों से अलग कर लिया था जिन्हें वे मानते थे कि व्यवस्था से अनजान हैं (यूहन्ना 7:47-49)। यहूदी लोगों पर प्रभाव का उनका मुख्य दायरा आराधनालय था (यूहन्ना 9:13, 22)। जोसेफस के अनुसार फरीसियों के पंथ की संख्या छह हज़ार थी।[26]

सदूकी लोग भी यूहन्ना को देखने आते थे। इस गुट में याजक और कुलीन होते थे। उनका नाम सुलैमान के समय के महायाजक सादोक से लिया गया हो सकता है (1 राजाओं 2:35)। फरीसियों की तरह ही उनका दल भी मक्काबी काल में ही बना हो सकता है। वे अपनी मनमानी जीवन शैली और रोमियों के साथ अपने सहयोग के साथ जाने जाते थे। ऐसा करते हुए उन्होंने शक्ति और विशेषाधिकारों को बनाए रखा था। सदूकी लोग स्वर्गदूतों, आत्माओं, पुनरुत्थान, या ईनाम और सज़ा में विश्वास नहीं रखते थे (22:23; प्रेरितों 23:8)।[27] इसके अलावा वे फरीसियों की मौखिक परम्पराओं को नकारते थे।[28] सदूकी लोग याजक थे इस कारण उनके प्रभाव का क्षेत्र यरूशलेम का मन्दिर था। फरीसी और सदूकी दोनों ही यहूदियों की महासभा में था जिसे सनहेद्रिन कहा जाता है।

यूहन्ना के पास आने वाले यहूदी अगुवे उससे जानना चाहते थे कि वह कौन है और जो कुछ वह कर रहा है उसे करने का अधिकार उसे किसने दिया (यूहन्ना 1:19-28)। उनमें से कुछ ने इस बात को महसूस किया कि उसका **बपतिस्मा** परमेश्वर के भविष्य के राज के लोग होने का संकेत देता है और उन्होंने उससे बपतिस्मा लेना चाहा। उन्हें देखकर यूहन्ना को क्रोध आ गया क्योंकि वे उनके कपट को जानता था। उसने उन्हें **सांप के बच्चो** कहा और उनसे पूछा, **''तुम्हें किस ने जता दिया कि आने वाले क्रोध से भागो?''** जिस प्रकार से सांपों के बिलों के पास आग आने पर वे भाग जाते हैं (देखें प्रेरितों 28:3), वैसे ही इन यहूदी अगुओं को लगा कि वे केवल बपतिस्मे के शारीरिक कार्य को मानने के द्वारा आने वाले न्याय से बच सकते हैं।

मत्ती 3:7 यूहन्ना और यीशु के प्रचार में एक और समानता देता है। ''सांप के बच्चो'' का लेबल बाद में विरोध करने वाले धोखेबाज और भ्रष्ट फरीसियों की पहचान के लिए यीशु ने इस्तेमाल किया (12:34)। उसने यूहन्ना जैसा ही प्रश्न पूछा: ''हे सांपो, हे करैतों के बच्चो, तुम

नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे ?'' (23:33)।

आयत 8. यूहन्ना ने फरीसियों और सदूकियों को बताया कि इतना ही काफ़ी नहीं है। उन्हें **मन फिराव के योग्य फल** लाना आवश्यक था। उन्हें बपतिस्मा लेने से पहले प्रमाण देना आवश्यक था कि उन्होंने मन फिरा लिया है। पवित्र शास्त्र में ''फल'' को प्रदर्शनकारी व्यवहार के रूप में देखा गया है (7:20; 12:33; 21:43)। सच्चे मन फिराव के लिए जीवन में सुधार बिल्कुल ज़रूरी है (प्रेरितों 26:20)। कुछ लोगों के लिए जैसे कि चुंगी लेने वालों और सिपाहियों के लिए यूहन्ना के निर्देशों में इस तथ्य का पता चलता है (लूका 3:10-14)।

आयत 9. यूहन्ना ने यहूदी अगुओं को उद्धार के लिए अपनी राष्ट्रीयता या खानदान पर निर्भर न होने का आग्रह किया। समय आ गया था कि परमेश्वर की दृष्टि में अपना पक्ष पक्का करने के लिए **अब्राहम** की शारीरिक सन्तान होने का दावा करना ही काफ़ी नहीं होना था। वास्तव में वे ऐसा कभी नहीं कर सकते थे। उन्होंने केवल अनुमान लगाया था कि वे अपने पूर्वजों के कारण परमेश्वर को स्वीकार्य हो सकते हैं (यूहन्ना 8:31-59; रोमियों 2:1-29; 4:1-25)। माउंस ने सुझाया है, ''रब्बियों की शिक्षा थी कि अब्राहम इतना भला व्यक्ति था कि उसने गुणों का एक भण्डार बनाया था जिसमें उसकी सन्तान की सभी आवश्यकताएं समा जाती हैं (तुलना *मेक्ल्टा एक्सोडस* 14:15)।''[29] प्राचीन यहूदी स्रोत के अनुसार, ''इसके बाद अब्राहम गेहन्ना [नरक] के प्रवेश द्वार पर बैठ जाएगा और किसी खतना किए हुए इस्राएली को उसमें जाने नहीं देगा।''[30]

''क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिए सन्तान उत्पन्न कर सकता है।'' डोनल्ड ए. हैग्नर का अवलोकन है कि ''यूहन्ना की बात शब्दों का खेल प्रतीत होती है, क्योंकि आरामी (और इब्रानी भी) भाषा में 'सन्तान' (*bĕnayyā´*) के लिए शब्द 'पत्थरों' (*´abnayyā´*) के लिए शब्द जैसा ही है।''[31] जंगल में यूहन्ना के लिए विजुअल एड के लिए इस्तेमाल करने के लिए ऐसे बहुत से पत्थर थे (देखें 4:3); ''इन'' सर्वनाम सुझाव देता है कि यूहन्ना ने पास पड़े कुछ पत्थरों की ओर संकेत किया। यहूदी लोग ''चट्टान'' से ''बने'' थे, यानी वे अब्राहम से निकले थे (यशायाह 51:1, 2)। परन्तु परमेश्वर अब्राहम के लिए आत्मिक सन्तान देने के लिए उन पर निर्भर नहीं था। लियोन मौरिस ने लिखा है, ''यूहन्ना उन्हें बताता है कि सबसे कठोर सामग्री में से ही परमेश्वर किसी भी समय आशीष पाए हुए लोग खड़े कर सकता है।''[32] यूहन्ना की बात अन्यजातियों को उसमें शामिल करने का संकेत देती हुई ही लगती है (देखें 8:11, 12; गलातियों 3:26-29)।

आयत 10. यूहन्ना ने फल के रूपक को (3:8) फलदायक पेड़ों तक ही विस्तार दिया। परमेश्वर की धार्मिकता का **कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ों पर रखा हुआ** था और फल न देने वाला हर पेड़ **काटा और आग में झोंका** जाना था। पुराने नियम में लोगों के स्पष्ट विनाश की सचित्र तस्वीर के रूप में जंगल काटे जाने के रूपक का इस्तेमाल होता है (यशायाह 10:33, 34; यिर्मयाह 46:22)। सुझाव दिया गया है कि यूहन्ना का हवाला 70 ईस्वी में रोमी सेना के द्वारा इस्राएल पर परमेश्वर के न्याय के सम्बन्ध में था। परन्तु अगली आयतों में आग और विनाश की ऐसी ही भाषा अन्तिम न्याय के समय आज्ञा न मानने वालों के विनाश का संकेत देती हुई लगती है। एक बार फिर यूहन्ना के कहे शब्द यीशु की शिक्षाओं में सुनाई देते हैं (7:19; देखें यूहन्ना 15:2, 6)।

आयत 11. यूहन्ना ने कहा कि वह लोगों को **पानी से बपतिस्मा देता** [था] है। NASB द्वारा इस आयत में इस्तेमाल किए गए उपसर्ग (*en*) ''के साथ'' के कई अर्थ हैं। क्रिया शब्द ''बपतिस्मा देना'' का अर्थ ''डुबकी'' है (3:6 पर टिप्पणियां देखें) इस कारण (*en*) का बेहतर अनुवाद ''में'' है; यूहन्ना ''पानी में'' डुबकी दे रहा था (JNT)।

यूहन्ना लोगों को **मन फिराव का** (*eis metanoian*) बपतिस्मा देता। इस विशेष वाक्यांश के अन्त पर मतभेद पाए जाते हैं। लुइस ने सही टिप्पणी की:

> यह तर्क नहीं दिया जा सकता कि बपतिस्मा इसे लेने वाले में पश्चात्ताप के लिए बनाया गया था, क्योंकि पश्चात्ताप तो बपतिस्मा लेने से पहले के शब्द हैं। विरोधी पक्ष में, जो लोग दावा करते हैं कि यहां हमें *eis* का ''अनियत'' उपयोग है (अर्थात लोगों को बपतिस्मा दिया जाता था क्योंकि उन्होंने पश्चात्ताप कर लिया था) *eis* के ऐसे इस्तेमाल के समानान्तर मामलों को नहीं बना पाया था। यदि हम मरकुस और लूका के वाक्यांश से मत्ती की व्याख्या करें [''मन फिराव का बपतिस्मा,'' मरकुस 1:4; लूका 3:3], तो यूहन्ना का बपतिस्मा मन फिराव के लिए या इसकी ओर संकेत करता था।[33]

हैग्नर ने कहा कि यह वाक्यांश '' 'के सम्बन्ध में,' 'के साथ,' या 'से सहमति में' के रूप में बेहतर समझ आता है।''[34] गुंड्री ने लिखा है, '' 'मन फिराव के लिए' संकेत देता है कि बपतिस्मा लोगों को सांकेतिक रूप में कार्य करते हुए अपने मन फिराव को वास्तविकता देने के योग्य बनाता है।''[35]

यूहन्ना का बपतिस्मा भी ''पापों की क्षमा के लिए'' था (मरकुस 1:4)। चाहे क्षमा की वास्तविक बात क्रूस पर मसीह की मृत्यु से पहले पूरी नहीं हुई थी (रोमियों 3:21-26; इब्रानियों 9:11-28), पर यूहन्ना का बपतिस्मा जिस उद्देश्य के लिए दिया जाता था वह उस समय मान्य था। हमें ऐसा कहीं नहीं मिलता कि मसीह की मृत्यु से पहले यूहन्ना का बपतिस्मा लिए हुए किसी व्यक्ति को दोबारा से बपतिस्मा दिया गया हो (प्रेरितों 1:15; 2:41; NIV)। पवित्र शास्त्र में किसी के दोबारा से बपतिस्मा लिए जाने का उल्लेख केवल इफिसुस में पौलुस को मिले बारह पुरुषों की घटना का है जिन्हें मसीह की मृत्यु के *बाद* यूहन्ना का बपतिस्मा दिया गया (प्रेरितों 19:1-7)। पिन्तेकुस्त के दिन ग्रेट कमीशन का बपतिस्मा आरम्भ होने के बाद, यूहन्ना का बपतिस्मा मान्य नहीं रहा था।

यूहन्ना ने बहुत स्पष्ट कर दिया कि जो उसके बाद आने वाला था उसने उससे **शक्तिशाली** होना था और उसने मसीह के अग्रदूत के रूप में अपनी भूमिका को विनम्रता से मान लिया (यूहन्ना 1:19-36; 3:28-30)। **जो मेरे बाद आने वाला है** वाक्यांश निस्संदेह कार्यक्रम के अनुसार यह मसीहा का विवरण भी है कि ''आने वाला'' (11:2, 3; NRSV)।[36]

यूहन्ना ने कहा कि वह **उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं** था। मौरिस ने इसकी व्याख्या की है:

> उस समय फलस्तीन में शिक्षकों को वेतन नहीं दिया जाता था, परन्तु शिष्यों के लिए जैसे भी हो अपने रब्बी की सहायता करना आम बात थी। रब्बियों की एक कहावत, ''हर वह

सेवा जो गुलाम अपने मालिक के लिए करता है वही सेवा अपने गुरु की जूती के तस्मे खोलने को छोड़, चेला करता है।'' यह यूहन्ना की दीनता ही है कि वह कहता है कि वह उस सेवा के योग्य नहीं है जिसे केवल गुलाम ही कर सकता है।[37]

यूहन्ना ने कहा कि जो उसके बाद आने वाला था और उसने **पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा** देना था। हमें इस भविष्यवाणी से यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि मसीह में पानी में बपतिस्मा नहीं देना था। यूहन्ना के कहने का यह अर्थ नहीं हो सकता, क्योंकि यीशु ने यूहन्ना द्वारा उसकी पुष्टि कर लेने के थोड़ी देर बार ही लोगों को बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी (यूहन्ना 3:26; 4:1, 2)। स्पष्टतया यूहन्ना के कहने का अर्थ था कि पानी में बपतिस्मा देने के अलावा यीशु पवित्र आत्मा में और आग में भी बपतिस्मा देना था।

स्वर्ग में लौट जाने से पहले यीशु ने अपने प्रेरितों को वचन दिया कि वह अपने चले जाने के बाद उन्हें पवित्र आत्मा को भेजेगा (यूहन्ना 14:16, 17, 26; 15:26, 27; 16:7-15)। पिता के पास ऊपर उठाए जाने से थोड़ा पहले यीशु ने उन्हें बताया कि ''थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे'' (प्रेरितों 1:5)। उसने कहा कि यह होने पर उन्हें ''यरूशलेम और सारे यहूदिया में, और पृथ्वी की छोर तक'' उसके गवाह होने के लिए ''सामर्थ'' दी जानी थी (प्रेरितों 1:8)। यह प्रतिज्ञा यीशु के ऊपर उठाए जाने के बाद पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हुई। उस दिन प्रेरितों को पवित्र आत्मा में बपतिस्मा दिया गया (प्रेरितों 2:4, 7, 14, 15)। प्रेरितों के हाथ रखे बिना स्वर्ग से पवित्र आत्मा के अपने आप केवल एक और बार आना (प्रेरितों 8:14-19; 19:1-7) कुरनेलियुस के घर में हुआ (प्रेरितों 10:24, 44, 45; 11:15-17)। इन दोनों अवसरों पर मसीह ने यहूदियों और अन्यजाति दोनों अर्थात ''सारी मनुष्यजाति'' पर पवित्र आत्मा को भेजा। जिससे आत्माओं का उद्धार हुआ (प्रेरितों 2:41; 10:47, 48)। आत्मा का बपतिस्मा योएल की भविष्यवाणी का पूरा होना था।

> ''उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा; तुम्हारे बेटे-बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे'' (योएल 2:28; देखें प्रेरितों 2:17)।

कुछ लोग यह सिखाते हैं कि आग का वह बपतिस्मा जब प्रेरितों पर जिसकी यूहन्ना ने बात की थी उस समय हुआ प्रेरितों पर ''आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं'' (प्रेरितों 2:3)। परन्तु ये वास्तव में आग की जीभें नहीं थीं, चाहे दिखने में वे ऐसी ही थीं। इसके अलावा प्रेरितों को आग में डुबकी (''बपतिस्मा'' का अर्थ) नहीं दी गई थी। यूहन्ना ने अगली आयत में इन शब्दों की अपनी व्याख्या दी।

आयत 12. मसीहा को कटनी के समय किसान के रूप में दिखाया गया। खेत में अनाज काट के डंठल काट लिए जाने के बाद उन्हें **खत्ते** में ले जाया जाता था। वहां बैल अनाज के दानों को पुआल से अलग करते हुए अनाज के ऊपर फावड़ा चलाता था। फिर किसान हवा में उड़ाने के लिए सूप का इस्तेमाल करता था। हवा भारी दानों को हल्की भूसी से अलग कर देती थी। दाने एक ढेर में भूमि पर नीचे गिर जाते थे जबकि भूसी हवा से दूर कर देती थी। किसान **अपने**

गेहूं को खलिहान में इकट्ठा कर लेता था। इसके विपरीत वह भूसी को ढेर लगाकर जला देता या इसे आग के लिए ईंधन के रूप में इस्तेमाल करने के लिए इकट्ठा कर लेता था। मसीह ने भी यही करना था **भूसी को उस आग से जलाएगा जो बुझेगी नहीं**। मलाकी 4:1 की मसीहा की भविष्यवाणी भूसी को ''सब अभिमानी और सब दुराचारी'' के रूप में परिचय देती है जिनकी ''न जड़ और न डंडी'' छोड़ी जाएगी (देखें 3:10)। ध्यान देने वाली बात है कि खत्ते का इस्तेमाल सांकेतिक अर्थ में न्याय के लिए पुराने नियम में भी किया गया है (भजन संहिता 1:4; यशायाह 17:13; 29:5, 6; 33:11; 41:15, 16; यिर्मयाह 15:7; होशे 13:3; सपन्याह 2:2)।

आग का बपतिस्मा जिसकी यूहन्ना ने बात की वह केवल न्याय की बात हो सकती है जब अधर्मियों को आग की झील में फैंका जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:11-15; 21:8)। मत्ती ने आग का इस्तेमाल न्याय के प्रतीक के रूप में बार-बार किया (5:22; 7:19; 13:40, 42; 18:8, 9; 25:31-33, 41, 46)। हमें आग के इस बपतिस्मे के लिए प्रार्थना नहीं करनी चाहिए, क्योंकि यह वह बपतिस्मा है जो हम नहीं पाना चाहेंगे।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का संक्षिप्त ब्यौरा (3:1-17)

प्रचारकों को जब काम के लिए बुलाया जाता है तो आम तौर पर उनसे अपना ब्यौरा देने के लिए कहा जाता है। मान लिया जाता है कि भाइयों को इससे पता चल सकता है कि यदि उस प्रचारक को काम पर रखा जाता है तो उससे किस प्रकार के काम की अपेक्षा की जाती है। यह अध्याय निम्न तथ्यों का सुझाव देता है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला अपने बारे में यह दावा कर सकता होगा।

नाम:

यूहन्ना। अब मुझे लोग यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के रूप में जानते हैं (3:1) क्योंकि मैंने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मे का प्रचार किया है और बहुत से लोगों को बपतिस्मा दिया है।

माता पिता:

अबिय्याह के दल का याजक जकर्याह और हारून की बेटियों में से इलीशिबा (लूका 1:5)।

जहां मैं सबसे अधिक समय रहा:

यहूदिया के जंगल, जहां मैं टिड्डियां और वनमधु खाकर गुज़ारा करता था (3:1, 4)।

प्रचार की मुख्य ज़िम्मेदारी:

प्रभु के मार्गों को तैयार करने के लिए उसके आगे जाना, उसके लोगों को उनके पापों की क्षमा के द्वारा उद्धार का ज्ञान देना (लूका 1:76, 77)।

हाल ही में प्रचार किए गए काम:

मैं सब लोगों को मन फिराने के लिए कहते हुए जंगल में पुकारने वाले की एक आवाज़ रहा हूं (3:3), क्योंकि राज्य निकट है।

अपने प्रचार में ...

- मैं पाप को कम नहीं बताता (3:1, 2)।
- मैं संदेश को बताने के लिए व्यक्तिगत सुख और सुविधा को रुकावट नहीं बनने देता (3:1, 3, 4)।
- मैं उन श्रोताओं से बात करते हुए जो पूरी तरह से वचन को नहीं मानते, कुछ अनछुए विषयों पर बात करता हूं (3:5-9)।
- मैं यीशु को बढ़ावा देता हूं (3:11, 12)।
- मैं चेतावनी देता हूं कि व्यक्ति के लिए खो जाना सम्भव है (3:10-12)।
- मैं बताता हूं कि उद्धार पाया जा सकता है (3:12)।[38]

लक्ष्य:

मैंने अपने अधिकतर लक्ष्य पा लिए हैं और कुछ विलक्षण अनुभव पाए हैं (3:13-17)।

अपडेट:

वर्तमान में मैं राजा हेरोदेस को डांटने के कारण जेल में हूं (लूका 3:19, 20)। चाहे मैं राजा हेरोदेस के अधिकार के अधीन हूं पर मैं फिर भी अपने प्रभु के अधिकार से स्वतन्त्र हूं।

यूहन्ना और यीशु से सबक (3:1-17)

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले (उसे यह नाम इसलिए दिया जाता है, क्योंकि वह लोगों को बपतिस्मा देता था) ने यहूदिया के जंगल में प्रचार करना आरम्भ किया और लोगों को मन फिराव के लिए प्रेरित किया। चार सौ वर्षों से अधिक की परमेश्वर की चुप्पी को तोड़ा। उसने अपने अनोखे लिबास और मज़बूत संदेश के बावजूद लोगों की भारी भीड़ को आकर्षित किया। उस समय यीशु ने अपनी स्वयं की अठारह सालों की खामोशी को तोड़ा। जहां तक हमें मालूम है, उसके विषय में उसे बारह साल की उम्र में अन्तिम बार सुना गया था; और इस बार वह लगभग तीस का हो चुका था (लूका 2:42; 3:23)। यह कहानी हमारे लिए कुछ सबकों का सुझाव देती है:

1. परमेश्वर की सेवा के लिए तैयारी एक पूर्व शर्त है (3:1-3)।
2. संदेश का महत्व संदेश देने वाले के बाहरी पहरावे से नहीं आंका जाना चाहिए (3:4-6)।
3. सच्चे मन से मन फिराव और अंगीकार के बिना बपतिस्मे का उद्देश्य पूरा नहीं होता (3:5-9)।
4. परमेश्वर की आज्ञा मानने से किसी को भी छूट नहीं है (3:13-15)।
5. परमेश्वर की सन्तान के रूप में स्वीकार किया जाना स्वर्ग की खोज करने वालों में सबकी अन्तिम आवश्यकता है (3:16, 17)।[39]

मसीह के लिए यूहन्ना की तैयारी (3:1-12)

मसीह के आने की यूहन्ना की तैयारी पर नीचे दिए गए प्वायंटों से एक सबक बनाया जा सकता है:

1. तैयारी का संदेश (3:1-4);
2. तैयारी का बपतिस्मा (3:5, 6);
3. तैयारी का मन फिराव (3:7-12)।

एक प्रचारक की विनम्रता (3:11-14)

मसीह के सामने खड़ा होने पर यूहन्ना ने विनम्रतापूर्वक क्षमा के लिए अपनी स्वयं की आत्मिक आवश्यकता को माना। उसने खुले मन से यीशु के सामने कहा कि उसे तो स्वयं बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है और वह यीशु को बपतिस्मा देने के अयोग्य है। यूहन्ना ने लोगों को अपने बाद आने वाले के बारे में बताया था। जब उसे पता चला कि यीशु ही मसीहा है, तो उसने दूसरों का ध्यान उसकी ओर दिलाया (यूहन्ना 1:29)। विनम्रता के यूहन्ना के उदाहरण को आज के प्रचारकों द्वारा नकल किया जाना चाहिए।[40]

प्रचारकों को अपना स्वयं का पाप मानते हुए परमेश्वर के सामने विनम्र होना आवश्यक है। कहा जाता है कि प्रचारक ''घायल चंगाई देने वाले'' हैं। वे दूसरों को वही अनुग्रह दे रहे हैं जो उन्होंने परमेश्वर से पाया था। पौलुस यीशु के शुभ समाचार को सुनाता हुआ पूरे रोमी साम्राज्य में घूमा पर उसने कभी ये बात नहीं भूली कि वह पापियों में ''सबसे बड़ा'' था (1 तीमुथियुस 1:15; KJV)।

प्रचारकों को अपने संदेश को पहले अपने ऊपर लागू करना आवश्यक है। यीशु ने फरीसियों को बड़ी कठोरता से डांटा क्योंकि ''वे कहते तो [थे] पर करते नहीं [थे]'' (23:3; NIV)। कोई प्रचारक प्रभावी नहीं हो सकता यदि लोग उसे कपटी के रूप में मानते हों (देखें 7:1-5)। पौलुस अपने आपको इस प्रकार अनुशासन में रखने के प्रति सचेत था कि ''औरों को प्रचार करे'' पर आप किसी रीति से ''निकम्मा न हो जाए'' (1 कुरिन्थियों 9:27)। वह अपने संदेश को नमूने के साथ पूरक बनाने में चौकस था। उसने लिखा: ''तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं'' (1 कुरिन्थियों 11:1)।

प्रचारकों को लोगों का ध्यान अपनी ओर नहीं बल्कि यीशु की ओर लगाने की आवश्यकता है। प्रचारक होने के कारण ही, किसी प्रचारक के लिए आकर्षण का केन्द्र बन जाना आसान है। परन्तु मुख्य केन्द्र मसीह होना चाहिए; प्रचारक तो संदेश देने के लिए केवल माध्यम है। पौलुस ने कहा: ''क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं'' (2 कुरिन्थियों 4:5)।

निष्कर्ष। प्रचारक जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के व्यवहार का अनुसरण करते हैं तो वे दूसरों को मसीह की ओर लाएंगे और परमेश्वर के राज्य की अपनी सेवा में अधिक प्रभावी होंगे।

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]यहूदी लोग दोनों नियमों के बीच के काल के दौरान खालीपन को समझते और एक भरोसेयोग्य नबी के लौटने का अनुमान लगाते थे (1 मक्काबियों 4:46; 9:27; 14:41; जोसेफस *अगेंस्ट एपियोन* 1.8)। [2]जोसेफस ने ''भीड़'' के उन लोगों की बात लिखी जो ''[यूहन्ना की] बातों को सुनकर अत्यधिक प्रभावित होते थे'' और ''लोगों

के ऊपर यूहन्ना का बड़ा प्रभाव था'' (जोसेफस *एंटीक्विटीस* 18.5.2)। [3]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 21. [4]जैक पी. लुईस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 54. [5]*थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ द न्यू टैस्टामैंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल, अनु. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 2:658–59 में गरहर्ड किट्टल, *''erēmos.''* [6]जॉन ए. ब्रॉडस, *कमैंट्री ऑन मैथ्यू* (लुइसविल्ले: पृष्ठ नहीं: 1886; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1990), 34. [7]रॉबर्ट एच. गुंडरी, *मैथ्यू: ए कमैंट्री आन हिज़ लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 43. [8]मत्ती ने ''परमेश्वर का राज्य'' वाक्यांश का इस्तेमाल केवल चार बार किया (12:28; 19:24; 21:31, 43)। [9]लुइस, 55; माउंस, 23. [10]पॉल टी. बट्लर, *आइज़याह,* अंक 3, बाइबल स्टडी टैक्सटबुक सीरीज़ (जॉप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस, 1978), 10.

[11]लुईस, 56; देखें *मैनुअल ऑफ़ डिस्पिलिन* 8.13–16; 9.19. [12]देखें जोसेफस *वार्स* 1.24.3. [13]गुंडरी, 45. [14]लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 55. [15]एच. लियो बोल्स, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1936), 71. [16]जोसेफस *एंटीक्विटीस* 18.5.2. [17]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व सम्पा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 2000), 164. [18]*डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एंड द गॉस्पल्स,* संपा. जोएल बी. ग्रीन एंड स्कॉट मैक्नाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 55 में डेविड एस. डॉकरी, ''बेपटिज़्म।'' [19]मिशनाह *मिक्वाओथ*। [20]डॉकरी, 56–57; देखें *मैनुअल ऑफ़ डिस्पिलिन* 3.4–9; 6.14–23. कुमरान समुदाय एसेनी दल से सम्बन्धित होगा। जोसेफस ने संकेत दिया कि एसेनी लोग शुद्धिकरण के प्रतिदिन के संस्कारों के भाग के रूप में ''ठण्डे पानी में नहाते थे'' (जोसेफस *वार्स* 2.8.5, 9)।

[21]जी. आर. बिसले-मुर्रे, *बैपटिज़्म इन द न्यू टैस्टामैंट* (पृष्ठ नहीं: डब्ल्यू. टी. विटले लैक्चरशिप, 1962; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1994), 18–31; देखें एपिक्टेटुस *डिसरटेशन्स* 2.9.9–21; मिशनाह *पेसाहिम* 8.8; तालमुड *येबामोथ* 46ए; *पेसाहिम* 91बी–92. [22]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, द *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, ऑरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 34. [23]लुईस, 58. [24]मक्काबियों 2:42; 7:13; 2 मक्काबियों 14:6. [25]मिशनाह *अबोथ* 3.14. [26]जोसेफस *एंटीक्विटीस* 17.2.4. [27]जोसेफस *वार्स* 2.8.14. [28]जोसेफस *एंटीक्विटीस* 18.1.4. [29]माउंस, 23. [30]*जेनेसिस रब्बाह* 48.8; देखें जस्टिन मार्टिर *डायलॉग विद ट्रायफो* 140.

[31]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 1–13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक्स, 1993), 50. [32]मौरिस, 59. [33]लुईस, 62. [34]हैग्नर, 51. [35]गुंड्री, 48. [36]देखें भजन संहिता 118:26; मलाकी 3:1; मत्ती 11:3; 21:9; 23:39; यूहन्ना 4:25. [37]तालमुड *केटुबोथ* 96ए; उद्धृत करते हुए, मौरिस, 61; देखें *बाबा बथरा* 53बी. [38]ये प्वायंट और मत्ती 3:1–17 पर आधारित ब्यौरा या रिज़्यूम बनाने का विचार जैक विल्हेम, ''जॉन द बैपटिस्ट'स रिज़्यूम ऐज़ ए प्रीचर,'' *RSVP न्यूज़लैटर* 153–8–83–36 (1983) से लिया गया। जैक विल्हेम, पी. ओ. बॉक्स 2222, फ़्लोरेंस, अलाबामा 35630 से अनुमति लेकर छापा गया। [39]जैक विल्हेम, ''दि बैपटिज़्म ऑफ़ जीज़स,'' *RSVP न्यूज़लैटर* 172–6–84–41 (1984)। [40]यह पाठ प्रचारकों के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है और इसका इस्तेमाल सामान्य रूप में सब मसीही लोगों के रूप में हो सकता है।